eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA PUBLICATION

PERSPECTIVE ARTICLE

अश्वमेघ यज्ञ: लौकिक संस्कृत साहित्य के परिप्रेक्ष्य में

संगीता कुमारी [1*]

[1] सहायक प्राध्यापिका, संस्कृत एवं वेदाध्ययन विभाग, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत

*CORRESPONDENCE
Address Department of Vedic Studies and Sanskrit, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Gayatrikunj-Shantikunj, Haridwar, Uttarakhand.

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2024 Sangita Kumari.
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

सारांश: यज्ञ भारत की एक मान्य एवं प्राचीनतम वैदिक उपासना है तथा यह भारतीय संस्कृति का पिता है। इसी कारणवश वैदिक साहित्य के साथ–साथ लौकिक संस्कृत साहित्य में भी यज्ञीय अवधारणा अपने सुन्दरतम एवं मधुरतम रूप में अभिव्यक्त हुई है।

वस्तुत: प्राचीन काल में साधारण यज्ञ आंतरिक परिष्कार एवं आत्मशुद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे और महायज्ञ सामाजिक जीवन को शुद्ध करने के लिए किये जाते थे। परंतु जब राष्ट्र एवं पर्यावरण के संपूर्ण नवनिर्माण की आवश्यकता हुई तो विश्व स्तर पर अश्वमेघ यज्ञ की परंपरा प्रारंभ हुई।

अश्वमेध राष्ट्र की सुख, शांति और समृद्धि बढ़ाने वाला एक भव्य एवं दिव्य आध्यात्मिक प्रयोग है। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार, "'अश्व' समाज में बड़े पैमाने पर बुराइयों का प्रतीक है और 'मेधा' सभी बुराइयों और अपनी जड़ों से दोष के उन्मूलन का संकेत है। अश्वमेध यज्ञ पारिस्थितिकी संतुलन और आध्यात्मिक वातावरण की शुद्धि के लिए गायत्री मंत्र से जुड़ा है।" तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार भी अश्वमेध यज्ञ राष्ट्र–निर्माण में सहायता करता है।

कूट शब्द: अश्वमेघ यज्ञ, लौकिक संस्कृत साहित्य

प्रस्तावना

वस्तुत:, यज्ञ एक विशिष्ट वैज्ञानिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन को सफल बना सकता है। प्रो० एस० सी० मुले के अनुसार, " यज्ञ संस्कृत शब्द वैदिक काल के जैव ऊर्जा विज्ञान का तकनीकी शब्द है, जिसका प्र–योग अग्नि के माध्यम से पर्यावरण के विषैले तत्व दूर करने की प्रक्रिया के अर्थ में होता था।"

अश्वमेध यज्ञ भारतवर्ष के एक प्रख्यात प्राचीनकालीन यज्ञ का नाम है। प्राचीनकाल में कोई भी राजा चक्रवर्ती राजा यानी संपूर्ण भारतखंड का राजा बनने के लिए अश्वमेध यज्ञ करता था, जिसमें देवयज्ञ करने के बाद अश्व की पूजा करके अश्व के मस्तक पर जयपत्र बांधकर उसके पीछे सेना को छोड़कर उसे भूमंडल पर छोड़ दिया जाता था। पुराणों में लिखा है की जो व्यक्ति 100 बार अश्वमेध यज्ञ को संपन्न कर लेता था उसे इंद्र की पदवी प्राप्त होती थी।

सम्राट	राजवंश	स्रोत
महाराज दशरथ	राजा रघु का वंश	ऋष्यश्रृङ्ग लवण्य कर्म चक्रर्दविजर्षभाः अश्वमेधे महायज्ञे राज्ञोऽस्य सुमहात्मनः (वाल्मिकी रामायण, बाल कांड, सर्ग 14 श्लोक 2)
भगवान रामचन्द्र	राजा रघु का वंश	अश्वमेधशतरिष्ट्वा तथा बहुसुवर्णकैः गवां कोट्ययुतं दत्त्वा विद्वद्भ्यो विधि निर्भयम् आंगेयं धनं दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो महयशाः (वाल्मिकी रा–मायण, बाल कांड, सर्ग 1, श्लोक 94–95)
महाराजा पृथु	कश्यप का वंश	चरमेनश्वमेधेन यजमाने यजुष्पतिम् वाणीये यज्ञपशुं स्रद्धन्नपोवाह ति–रोहितः (भक्तिवेदांत वेद आधार भागवत पुराण 4.19.11)
राजा पुरंदर (इंद्र)	कश्यप का वंश	हृदय बलिसमः कृष्णे प्रह्राद इव सग्रहः आर्तैशोऽश्वमेधानां वृद्धानां प्युपासकः (भक्तिवेदांत वेद आधार भागवत पुराण 1.12.25)
सोमदत्त, कृशाश्व का पुत्र	दिष्ट का राजवंश (वैवस्वत मनु का पुत्र)	कृषाश्वात्सोमदत्तोऽभूद्योऽश्वमेधारिदस्पतिम्। इष्ट्वा पुरुषमापाग्र्यं गतिं योगेश्वराश्रितम्।। (भक्तिवेदांत वेद आधार भागवत पुराण 9.2.35–36)
महाराजा अम्बरीष	नाभाग का वंश (वैवस्वत मनु का पुत्र)	इजेऽश्वमेधैरध्ययज्ञमीश्वरं महाविभूत्योपचिताङ्गदक्षिणैः ततर्वसिष्ठा–सितगौतमादिभिरधन्वन्यभिस्रोतमौ सरस्वतीम् (भक्तिवेदांत वेद आधार भागवत पुराण 9.4.22)
महाराज सगर	इक्ष्वाकु (वैवस्वत मनु के पुत्र) का वंश	सोऽश्वमेधैर्यजत् सर्ववेदसूरात्मकम् सर्वोपदिष्टयोगेन हरिमात्मानमी–श्वरम् तस्योत्सृष्टं पशुं यज्ञे झारश्वं पुरंदरः (भक्तिवेदांत वेद आधार भागवत पुराण 9.8.7)
उशना, धर्म का पुत्र	यदु का वंश ।	तेषां तु षट्प्रधानानां पृथुश्रवस आत्मजः धर्मो नमोशना तस्य ह्यमे–धशतस्य यत् (भक्तिवेदांत वेद आधार भागवत पुराण 9.23.33)
महाराज युधिष्ठिर	कुरु वंश	याजयित्वाश्वमेधैस्तं त्रिभिरुत्तमकल्पकैः तद्यशः पौरं दिक्षु शतमन्यो–रिवतानोत (भक्तिवेदांत वेद आधार भागवत पुराण 1.8.6)
महाराज परीक्षित	कुरु वंश	हृदय बलिसमः कृष्णे प्रह्राद इव सग्रहः आर्तैशोऽश्वमेधानां वृद्धानां प्युपासकः (भक्तिवेदांत वेद आधार भागवत पुराण 9.22.37)
जनमेजय (परीक्षित के पुत्र)	कुरु वंश	कलशेयं पुरोधाय तुरं तुर्गमेधशात् समन्तत्पृथिवें सर्वं जित्वा यक्ष्यति चाध्वरायः

तालिका 1: अश्वमेध यज्ञ करने वाले कुछ राजाओं की सूची

अश्वमेघ यज्ञ लौकिक संस्कृत साहित्य में

राजा दशरथ तथा युधिष्ठिर के अश्वमेध प्राचीन काल में संपन्न हुए कहे जाते हैं। रामायण कालीन समाज पंच यज्ञ की परम्परा का अनुसरण करता था। भगवान राम का समूचा जीवन यज्ञमय था। महाकवि तुलसीदास ने भी उनके जीवन के यज्ञीय पक्ष को विस्तार से उल्लखित किया है और आदि कवि वाल्मीकि ने भी। उत्तरकाण्ड में रामराज्य के धर्म, सुख– सम्पदा के प्रसार पर प्रकाश डालते हुये तुलसीदास जी ने लिखा है कि भगवान राम ने हजारों अश्वमेध यज्ञ किये और अनेक ब्राह्मणों को दान दिया।

महाभारत में अनेक स्थलों पर यज्ञ की महिमा का वर्णन मिलता है। इसके चतुर्दश पर्व " आश्वमेधिक पर्व" में महर्षि व्यास का कथन है– " असुराश्च सुरश्चैव पुण्य हेतोर्मखक्रि–याम् । प्रयतन्ते महात्मान स्तस्मद्यज्ञा: परायणम् ।। यज्ञेरेव

महात्मानो बभूबुरधिका: सुरा:। ततो देवा: क्रियावन्तो दान–वानभ्यघर्षयन्।। (14.36.7) युधिष्ठिर के अश्वमेध का विस्तृत रोचक वर्णन "जैमिनि अश्वमेध" में मिलता है।

महाकवि कालिदास कृत "रघुवंश" के तृतीय सर्ग में राजा रघु अश्वमेध यज्ञ कर अपने पिता राजा दिलीप से राज्यग्रहण करते हैं। भवभूति रचित उत्तररामचरित, महावीरचरित एवं मा–लतीमाधव में भी यज्ञ के वर्णन मिलते हैं। तत्कालीन समाज में ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, नृयज्ञ, धनुष यज्ञ, सोम यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ एवं वाजपेय यज्ञ प्रचलित थें।

द्वितीय शती ई.पू. में शुंगवंशी ब्राह्मणनरेश पुष्ययमित्र ने दो बार अश्वमेध किया था, जिसमें महाभाष्यकर पतञ्जलि स्वयं उपस्थित थें (इह पुष्यमित्रं याजयामः)। गुप्त सम्राट् समुद्रगुप्त ने भी चौथी सदी ई. में अश्वमेध किया था, जिसका परिचय उनकी अश्वमेधीय मुद्राओं से मिलता है। दक्षिण के सतवाहन, चालुक्य और यादव नरेशों ने भी यह परम्परा जारी रखी। इस परम्परा के पोषक सबसे अंतिम राजा जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह प्रतीत होते हैं, जिनके द्वारा किये अश्वमेध यज्ञ का वर्णन श्री–कृष्ण भट्ट कविकलानिधि ने "ईश्वरविलास महाकाव्य" में तथा महानन्द पाठक ने अपनी "अश्वमेधपद्धति" (जो किसी राजेन्द्र वर्मा की आज्ञा से संकलित अपने विषय की अत्यंत विस्तृत पुस्तक है) में किया है।

उपसंहार

इस प्रकार, अश्वमेध यज्ञ राष्ट्र की सुख, शांति और समृद्धि बढ़ाने वाला एक भव्य आध्यात्मिक प्रयोग के साथ–साथ संपूर्ण राष्ट्र के सूक्ष्म वातावरण को शुद्ध करने वाला महत्त्वपूर्ण घटक है। इसका उद्देश्य जनता की सुप्त बौद्धिक प्रतिभा को जागृत करना है। जागृत मानव मेधा ही समाज और शासन के पद्धति को सुधारने में मदद करेगी और इस धरती को स्वर्ग में परिवर्त्तित करेगी।

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

सन्दर्भ

[1] गैरोला वाचस्पति. वैदिक साहित्य और संस्कृति, चौख–म्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी, 1997

[2] उपाध्याय आचार्य बलदेव. संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001

[3] कुमार डॉ० शशिप्रभा. भारतीय संस्कृति के विविध आयाम, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2005

[4] उपाध्याय आचार्य बलदेव. संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, शारदा संस्थान, वाराणसी, 1978

[5] चौधरी रामविलास. संस्कृत साहित्य का समालोचना–त्मक इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 1998

[6] पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी रचित यज्ञ संबंधी ग्रन्थ एवं अखंड ज्योति पत्रिका